REVIEW OF RESEARCH

रूद्रप्रयाग जनपद के सामाजिक–आर्थिक विकास में पर्यटन का योगदान

डॉ. गुरूप्रसाद थपलियाल[1] एवं श्री प्रमोद सिंह[2]

[1]एसिसटेन्ट प्रोफेसर, राजकीय महाविद्यालय देवप्रयाग टि. ग.,
[2]एसिसटेन्ट प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय अगरोड़ा टिहरी गढ़वाल उत्तराखण्ड.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

प्रस्तावना –

पर्यटन शब्द अंग्रजी शब्द 'Tourism' का सम्बन्ध ज्वनत से है, जो कि लैटिन भाषा से लिया गया है। सामान्यतः मनुष्यों के इधर– उधर घुमने तथा विभिन्न गन्तवय स्थानों पर ठहरने को पर्यटन कहते है। पर्यटन से मानवों में नवीन स्फूर्ति का संचार होता है। पर्यटन मानव की मौलिक प्रवृत्ति है। भूगोल का उद्दे"य धरातलीय एवं विभिन्नतओं का अध्ययन करना है। मानव पर्यटन द्वारा इन्हीं विविधताओं का अवलोकन कर ज्ञान की वृद्वि एंव मनोरजंन करता है। पर्यटन के प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक घटक मुख्य है। प्राचीन काल में पर्यटन मुख्यतया धार्मिक स्थानों तक ही सीमित था। वर्तमान समय में पर्यटन के स्वरूप में बदलाव आया है। पर्यटक प्राकृतिक, सांस्कृतिक एंव धार्मिक पर्यटन स्थलों में वर्ष भर जाते रहते है जिन क्षेत्र में पर्यटन स्थलों का विकास है वहां का आर्थिक एंव सामाजिक विकास अधिक हुआ है। वर्तमान समय में पर्यटन एक उद्योग के रूप में विकसित हो रहा है। जनपद रूद्रप्राग में प्राकृतिक,सांस्कृतिक,धार्मिक पर्यटन स्थलों की अधिकता है लेकिन जनपद के कुछ ही पर्यटन स्थलो जानकारी पर्यटको को है। प्रस्तुत शोध पत्र में उन पर्यटन स्थलों की जानकारी एंव वि"ोषताओं को अवगत करना है। जिन पर्यटन स्थलों की जानकारी पर्यटको को कम है। जिससे पर्यटक इन स्थलों में अधिक आ सके, तथा जनपद का सामाजिक आर्थिक विकास हो सके।

प्रस्तावनाः–

अध्ययन क्षेत्र– जनपद रुद्रप्रयाग उत्तराखण्ड प्रदे"ा में स्थित है। जनपद रुद्रप्रयाग के उत्तर प"िचम में जिला उत्तरका"ी, पूर्व में जनपद चमोली, दक्षिण में जनपद पौड़ी गढ़वाल तथा प"िचम में जनपद टिहरी स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से जनपद रुद्रप्रयाग 30^0 10′ उत्तरी अक्षां"ा, 30^0 50′ उत्तरी अक्षां"ा तथा 78^0 50′ पूर्व दे"ान्तर से 79^0 20′ पूर्वी दे"ान्तर के बीच स्थित है। रुद्रप्रयाग जनपद 1984 वर्ग किमी0 क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी अधिकतम ऊँचाई समुद्र सतह से 6,940 मीटर (केदारनाथ चोटी) एवं सबसे न्यूनतम ऊँचाई 610 मीटर है। जनपद में 658 आबाद ग्राम, 38 गैर आबाद ग्राम हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 242285 है।

विधितन्त्र– प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोत में साक्षात्कार, प्रश्नावलीयां क्षेत्र भ्रमण से एकत्रित किये गये। द्वितीय स्रोत्रों में जिला मुख्यालय पर्यटन विभाग तथा सांख्यिकीय विभाग बद्री केदार मन्दिर समिति से प्राप्त किये गये।

जनपद रूद्रप्रयाग में पर्यटन– जनपद रूद्रप्रयाग प्राचीन काल से धार्मिक पर्यटन का केन्द्र रहा है। हिमालय पॉच खण्डों में विभक्त था जिसमें तीसरा खण्ड केदार खण्ड है जिसके अर्न्तगत जनपद रूद्रप्रयाग स्थित है। जनपद रूद्रप्रयाग प्राचीन समय से ही धार्मिक यात्राये होती है। लेकिन वर्तमान समय में पर्यटक जनपद के धार्मिक पर्यटक स्थलो, प्राकृतिक पर्यटन स्थलो, सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों में आते है। जनपद रूद्रप्रयाग में धार्मिक पर्यटन स्थलों की संख्या अधिक है। जनपद वन्य जीव जन्तुओं के लिये विख्यात है, यहाँ केदारनाथ प"] विहार है। साहसिक पर्यटन स्थलो की अधिकता है। पारिस्थितिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन की अधिक सम्भावना है। जनपद रूद्रप्रयाग में पर्यटन के विभिन्न आयाम है। जिन्हे निम्नलिखित प्रकारों में विभिक्त कर सकतें है। 1 धार्मिक पर्यटन (मन्दिर) 2 प्राकृतिक पर्यटन बुग्याल वन्य जीव विहार, झरने, झील/ताल 3 मानव निर्मित पर्यटन पार्क, बर्ड व्यूईगं ट्रैकरूट ऐतिहासिक स्थल, मेले, पर्वतारोहण, स्कीइंग, पैरा ग्लाइडिंग, रिवर राफटिंग साहसिक पर्यटन स्थल आदि।

प्राकृतिक पर्यटन स्थल

धार्मिक पर्यटन– किसी भी दे"ा के विकास में वहां के धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन की बहुत बड़ी भूमिका होती है। एक ओर जहां उसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन का दे"ा–विदे"ा में प्रचार–प्रसार होता है, वहीं दूसरी ओर वहां के पर्यटन विकास से दे"ा एवं वहाँ के नागरिकों को उत्तरोत्तर लाभ भी मिलता है। पर्यटन से स्थानीय लोगों की जीवन–"ौली, नृत्य, संगीत एवं धार्मिक कार्यकलाप आदि,का विकास होता है। पर्यटन एक प्रकार का ऐसा जनसंपर्क है, जो समस्त वि"व के दे"ाों को सांस्कृतिक आदान प्रदान करने के लिए प्रेरित करता है। जनपद रूद्रप्रयाग में धार्मिक पर्यटन निम्न हैं। जहां लाखों पर्यटक हर वर्ष आते है।

धार्मिक पर्यटन स्थल जनपद रूद्रप्रयाग में

क्र0स0	पर्यटन स्थलों के नाम	उचाई मी0	क्र0स0	पर्यटन स्थलों के नाम	उचाई मी0
1	केदारनाथ	3289	13	हरियाली देवी मन्दिर	1800
2	तुगनांथ	3750	14	देवलसारी मन्दिर	1600
3	कालीमठ	1500	15	मुनी महाराज मन्दिर	1650
4	अगस्त्यमुनी	762	16	ज्वाल्पा मन्दिर	980
5	वि"व नाथ मन्दिर	1492	17	नगेला मन्दिर	102
6	नारायण कोटी	1799	18	नरसिंह मन्दिर	1320
7	गौरी मन्दिर	2150	19	वासुदेव मन्दिर	1420
8	राजराजे"वरी	1650	20	रूद्रनाथ मान्दिर	610
9	त्रियुगीनारायण	1982	21	सूर्यमन्दिर	650
10	मढियाणा मन्दिर	2019	22	काली मन्दिर	1430
11	कार्तिकेय स्वामी मन्दिर	1900	23	ओंकारे"वर मन्दिर	1530
12	नारायण मन्दिर	1600	24	सैजा मन्दिर	189

सांस्कृतिक पर्यटन – जनपद रूद्रप्रयाग में विभिन्न जाती धर्मो के लोग निवास करते है। जिनकी अपनी अपनी संस्कृति, रीति रिवाज, मेले त्यौहार होते है। इन मेले त्यौहारों को बड़ी धूम धाम से मनाते है। जैसे जाख मेला, वै"ाखी मेला, उत्तरायण मेला, सहजा का मेला, आदि जहां हजारो की संख्या में पर्यटक आते है। जनपद रूद्रप्रयाग हिमालय क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहां अनेक प्राकृतिक पर्यटन स्थल है। उंची उंची बर्फ से आच्छादित चोटियां, पहाड़ो से गिरता हुआ पानी (झरने) उंचे स्थानों में प्राकृतिक झीले , विभिन्न प्रकार की वनस्पतियॉ एंव फूल , विभिन्न किस्म के जीव, जन्तु आदि जनपद के पर्यटन स्थलों की पहचान है लेकिन ऐसे भी प्राकृतिक पर्यटन स्थल है जिन की जानकारी केवल स्थानीय लोगों तक ही सीमित है। इन पर्यटन स्थलो का प्रचार प्रसार न होने के कारण इन पर्यटन स्थलों में बहारी पर्यटन नही जा पाते है, जनपद रूद्रप्रयाग में निम्न लिखित प्राकृतिक पर्यटन स्थल है।

जनपद रूद्रप्रयाग में मुख्य प्राकृतिक पर्यटन स्थल

क्र0स0	पर्यटन स्थलों के नाम	क्र0स0	पर्यटन स्थलों के नाम
1	देवरिया ताल	10	बुढा मदमहे"वर बुग्याल
2	नदी कुण्ड	11	पांवली काठा
3	चौरीवादी ताल	12	केदार बुग्याल
4	बधाणी ताल	13	खास ममणी बुग्याल
5	वासुकी ताल	14	गॉधी सरोवर
6	पैया ताल	15	जम्मूखाल
7	देव ताल	16	जखोलीखाल
8	यम ताल	17	नगराजा सैण्ड
9	दुगलबिटठा चोपता	18	तोली सैन

वन्य जीव पर्यटन– वनस्पति एवं जीव–जन्तुओं की विविधताओं के लिए रूद्रप्रयाग जनपद का अपना एक वि"ोष स्थान है। जनपद में जलवायु एवं ऊंचाई में अन्तर होने के कारण जीव–जन्तुओं एवं वनस्पतियो में अन्तर मिलते हैं। जनपद के उच्च हिमालय क्षेत्रों में कस्तूरी मृग,एंव ब्रहम कमल जैसे पुष्प मिलते है। जैव विविधता से धनी यह क्षेत्र पर्यटकों के अलावा अनुसंधानकर्ताओं का प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है। दे"ा–विदे"ा के अनेक अनुसंधानकर्ता वर्ष भर इस क्षेत्र में पहुंचते है। जो अनुसंधान के साथ साथ पर्यटन को बढावा देते है।

साहसिक पर्यटन– जनपद रूद्रप्रयाग पर्वतीय एवं विषम भू–भाग होने के कारण यहां साहसिक पर्यटन की अपार सम्भावनाएं है। यहां ट्रैकिंग, रॉक क्लाइबिंग स्कीइंग, पैरा ग्लाइडिंग, बन्जी जम्पिंग, रिवर राफ्टिंग जैसे अनेक साहसिक खेलों के लिए उपर्युक्त भौगोलिक द"ाएं विद्यमान है। वर्तमान में युवाओं का रूझान भी साहसिक खेलों में बढ़ रहा है। जनपद में साहसिक पर्यटन की सम्भावनाओं को देखते हुए पर्यटन विभाग द्वारा फाटा में बालक वर्ग एंव बालिकाओं को प्र"िाक्षण दिया जाता है। मन्दाकिनी नदी में रीवर राफ्टिंग के लिए वर्ष भर उपयुक्त द"ाायें हैं। जनपद में साहसिक पर्यटन स्थलों का विकास किया जाय, तो साहसिक पर्यटन जनपद के आर्थिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

ग्रामीण पर्यटन– आज दे"ाी–विदे"ाी पर्यटकों को शहरी जीवन शैली पंसद नहीं आ रही है और वे शोरगुल व प्रदूषण से दूर ग्रामीण पर्यटन का रूख कर रहे है। अब पर्यटन का अभिप्राय बडे शहरों के ऐतिहासिक स्थान ही नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों की कला और सांस्कृतिक विरासत को समझना भी शामिल है। ग्रामीण पर्यटन स्थल अन्य पर्यटन स्थलो की तुलना में सस्ते और प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूण हैं। यहाँ पर हर मौसम में पर्यटन का लुप्त उठाया जा सकता है। यही कारण है कि सादगी, ईमानदारी, खातिरदारी और खुले दिल से मेहमान–नवाजी देखकर पर्यटक अपने आप गाँवों की तरफ खिंचे चले आते है। जनपद रुद्रप्रयाग में ग्रामीण पर्यटन स्थलों के विकास के लिए सरकार ने पर्यटन ग्रामों को बुनियाद रखी है। जिसके अन्तर्गत तिलवाडा एवं दुर्गाधार गाँव, कोटी गाँव, कविल्ठा, फलासी गाँव, सारी गाँव, एवं तुगनाथ गाँव, सम्मिलित है। जनपद में ग्रामीण पर्यटन के सम्भावित क्षेत्रो में गौरीकुण्ड, नारायणकोटी, गौण्डार, रासी,मनसूना, मक्कूमठ, दुगलविठा, बसुकेदार, पिल्लू, कनकचौंरी, चन्द्रनगर, उत्तरसू, बधाणी, जखोली, मयाली, सतेराखाल, लदोली, दानकोट आदि है यदि इन गांवों को पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित किया जाय तो पर्यटन उद्योग के साथ साथ ग्रामीणो के आर्थिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा।

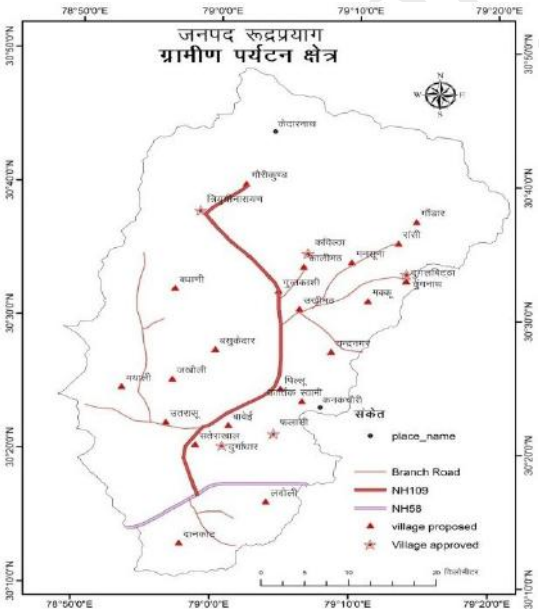

मन्दाकिनी नदी में रीवर राफ्टिंग

सामाजिक–आर्थिक विकास – किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में पर्यटन विपणन की भूमिका महत्व पूर्ण होती है। वि"व के सभी दे"ाों में पर्यटन को एक महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया माना जा रहा है। जिसके द्वारा वे अपने आर्थिक क्रियाओं में तेजी ला सकते है। पर्यटन के विकास से, व्यापारी, परिवहन,कलाकारों, ि"ाल्पकारों आदि विकास होता है जिसमें क्षेत्र में रोजगार के साथा क्षेत्र का भी विकास होता ह। पर्यटन से सामाजिक वातावरण प्रभावित होता है। व्यक्तियों की मानसिक एंव शारीरिक स्वास्थ्य, ि"ाक्षा, ज्ञान और मानोरंजन के साथा विभिन्न समाजों की सांस्कृतिक रंग–रूप के बारे में जानकारी होती है।

जनपद के सामाजिक विकास में पर्यटन का योगदान– जनपद रूद्रप्रयाग में पि"चमी पर्यटन और उनकी सभ्यता के कारण जनपद रूद्रप्रयाग के समाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किसी भी समाज में परिवर्तन तभी सम्भव है जब कोई अन्य समाज उस समाज के सम्पर्क में आये। जनपद रूद्रप्रयाग में पर्यटन के कारण स्थानीय लोग बाहर के लोगों क सम्पर्क में आये अर्थात् दो भिन्न–भिन्न संस्कृतियों को अन्तःक्रियाया आदान–प्रदान करने का अवसर मिला। जनपद में आधुनिक पर्यटन से प्राचीन पर्यटन में बदलाव होने लगे, जनपद में पर्यटन में वृद्धि होने से जहाँ समाज का आर्थिक विकास हुआ है,वहीं सांस्कृतिक विकास को भी गति एवं दि"ाा मिली।

पर्यटन से रहन–सहन के स्तर में वृद्धि – .पर्यटन के कारण जनपद रूद्रप्रयाग में रहन–सहन में व्यापक वृद्धि हुई है। पर्यटकों को देखकर तथा अनुकरण करने की प्रवृत्ति से जनपद रूद्रप्रयाग के समाज के रहन–सहन का विकास हुआ है। यह विकास पर्यटन मार्गो पर अधिक दिखाई पड़ता है। जनपद के स्त्री–पुरूष 50 वर्ष पूर्व जीन्स, पैंट, कोट, आदि का प्रयोग ना के बराबर करते थे। वर्तमान समय में जनपद में स्त्रियॉ धोती,सलवार कमीज पहनते तथा लड़कियों सलवार ,कमीज, जीन्स, पैट तथा टॉप, कुर्ती आदि का प्रचलन देखने को मिलता हैं, पर्यटन से जनपद के समाज के रहन–सहन में विकास तो हुआ है परन्तु यहाँ की संस्कृति धीरे–धीरे लुप्त हो रही है। आज भी जनपद के पिछड़े क्षेत्रों या जो क्षेत्र पर्यटन मार्गो से दूर है, यहाँ पारम्परिक वे"ा–भूषा एवं वस्त्रों में स्त्रीयों एंव पुरूषो को देखा जा सकता है। जो इस क्षेत्र की संस्कृति को सजोये हुए है।

जनपद में पर्यटन से खान– पान का विकास–पर्यटन से जनपद के होटलों एवं भोजनालयों में जहाँ विभिन्न दे"ाी एवं विदे"ाी भोजनों से जनपद रूद्रप्रयाग का समाज परिचित हुआ,वही छुआ–छूत, ऊँच–नीच जैसी संकुचित विचारधाराओं को समाप्त करने में भी पर्यटन का मुख्य योगदान रहा है। जनपद में अण्डा, मीट, चाऊमीन, मैगी आदि का प्रयोग गांवों तक पहुंच गया है। क्षेत्र में गढ़वाली मूल व्यंजनों का प्रयोग तो समाप्त सा हो गया है। जनपद में "ाादी एवं विवाह के वि"ोष अवसरों पर प्राचीन परम्परा से हटकर दाल–चावल की जगह मटर–पनीर छोले एवं पुलाव आदि भोजन प्रचलन हैं। वर्तमान समय में सरकार द्वारा स्थानीय व्यंजनों को बढ़ावा देने के लिए सरकारी एवं होटलो में उपहार के रूप में प्रस्तुत कर रहें हैं। जिसका पर्यटक लुप्त उठा रहें हैं। सरकार द्वारा मन्दिरों के प्रसाद क रूप में भी स्थानीय उत्पादो का उपयोग किया जा रहा हैं।

पर्यटन से भाषा का विकास– जनपद में बोली जानी वाली भाषा को गढ़वाली भाषा कहकर सम्बोधित किया जाता है। पर्यटन के कारण इस भाषा पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरह से प्रभाव परिलक्षित हुये हैं। गढ़वाली भाषा कम बोली जारही है अन्य भाषायें अधिक बोली जारही है। पर्यटन के कारण ही यहाँ का समाज विभिन्न दे"ाीय एवं विदे"ाी भाषाओं से परिचित हुआ है। पर्यटन मार्गो पर पड़ने वाले स्थानीय लोगों को विभिन्न भाषाओं की थोड़ी बहुत जानकारी है।

जनपद में पर्यटन से आर्थिक विकास– पर्यटन, आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण कारक है। पर्यटन वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग को प्रोत्साहन देता है, और वह उन क्षेत्रों को प्रेरित करता है, जो इन वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करते है। पर्यटन गतिविधियों स भोजन, निर्माण, कला और हस्ति"ाल्प तथा वाणिज्य को अविष्ठित करने वाले क्षेत्रों का विकस हुआ है। रोजगार के रूप में पर्यटन को उन क्षेत्रों के लिए वि"ोष कर महत्वपूर्ण समझा जाता है जहाँ धार्मिक एवं सांस्कृतिक, प्राकृतिक साधनों का विकास है। पर्यटन उद्योग, से पर्यटन गाइड फोटोग्राफर, परिवहन, एंव बिभिन्न व्यवसायो में लोगों को रोजगार उपलब्ध कराते हैं। पर्वतीय

पर्यटन में परिवहन का कार्य भारी संख्या में घोडे तथा खच्चरों डण्ड़ी–कण्ड़ीयों एवं कुलीयो के द्वारा भी किया जाता है। जिससे अधिक लोगाो को रोजगार मिलता है।

पर्यटन से जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति रोजगार की स्थिति

विभिन्न रोजगार क्षेत्र	सम्बन्धित क्षेत्र	कार्य का कुल समय	औसत आय (प्रति छमाही)			
			2013	2014	2015	2016
व्यवसाय	केदारनाथ, तुंगनाथ, मद्महेश्वर	छमाही	3,056	8,098	13,500	15,000
घोड़ा–खच्चर	केदारनाथ, तुंगनाथ, मद्महेश्वर	छमाही	37,000	45,000	1,32,000	1,50,000
डण्डी–कण्डी	केदारनाथ, तुंगनाथ, मद्महेश्वर	छमाही	45,000	25,000	1,47,000	1,50,000
टूर गाइड	केदारनाथ, तुंगनाथ, मद्महेश्वर	छमाही	17,064	10540	52,000	50,000
टूर एण्ड ट्रैवल्स एजेंसी	केदारनाथ, तुंगनाथ, मद्महेश्वर	छमाही	2,00,654	3,09,870	6,78,000	8,00,000

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण के द्वारा 2017

तालिका में प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर विभिन्न रोजगार सम्बन्धित क्षेत्रों में रोजगार प्राप्ति का विवरण दिया गया जनपद में ऐसे अनेक अनछुए पर्यटन स्थल मौजूद है, जहाँ पर्यटक जाना चाहता है। परन्तु प्रा"ाक्षित गाइड आवागमन के साधन, खच्चर, घोड़ों का अभाव तथा कुली, मजदूरों के उपलब्ध न होने के कारण इन प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक,धार्मिक पर्यटन स्थलों नही जा पाते है। इन पर्यटन स्थलों में पर्यटन संसाधनों का विकास करके जनपद में रोजगाार के साथ आर्थिक एवं सामाजिक किया जा सकता है।

जनपद मे पर्यटन से परिवहन आवास एवं भोजन व्यवसाय से प्राप्त आय – पर्यटक अपने मूल निवास पर अर्जित धन का व्यय पर्यटन के दौरान यात्रा एवं गन्तव्य पर आव"यक जरूरत की वस्तुओं तथा सेवाओं जैसे परिवहन, आवास, भोजन एवं पेय तथा वि"िाष्ट स्थानीय उत्पादों पर व्यय करता है। पर्यटक अपने कुल बजट का 42 प्रति"ात भाग परिवहन, 21 प्रति"ात आवास सुविधा पर तथा लगभग 22 प्रति"ात भाग भोजन एवं पेय पदार्थो पर 10 प्रति"ात खरीद दारी, तथा 5 प्रति"ात अन्य मदो पर व्यय करता है। पर्यटन व्यवसाय में लगे व्यक्तियों तथा सेवा संगठनो में भोजन तथा आवास, परिवहन द्वारा सबसे अधिक लाभ अर्जित किया जाता है। प्रत्येक सेवा मद पर किया जाने वाला व्यय सदैव समान नही रहता है। पर्यटको द्वारा किया गया व्यय गुणवत्ता के आधार पर अधिक एंव कम हो सकता है।

निष्कर्ष–

पर्यटन स्थानीय समाज, संस्कृति, रीति रिवाजों और जीवन शैली, आर्थिकता पर पर्यटक का प्रभाव पड रहा। जनपद में कई ऐसे प्राकृतिक पर्यटक स्थल हैं। जो अपने आप में अदभुत सौन्दर्य को समेटे हुऐ है। जनपद में कई मनमोहक जैसे झरने, वन्य जीव जन्तु, प्राकृतिक वनस्पति साहसिक, जलक्रिया, आध्यात्मिक, प्राकृतिक पर्यटन क्षेत्र है लेकिन इनके प्रचार एवं प्रसार न होने कारण इनकी जानकारी स्थानीय लोगो तक सीमित है। इन पर्यटन स्थलों का प्रचार प्रसार करने की आव"यकता है। जनपद म नये पर्यटन क्षेत्रों को विकसित किया जाय तो जनपद के युवा वर्ग को रोजगार एंव सामाजिक एवं आर्थिक विकास होगा ।

सन्दर्भग्रन्थ

1. Ahmed Z.U(1992) Review of tourism in U.S.A Tourism management*vol.13,sep. .p.p 33641*
2. Bagri S.C 1993.Mountain tourism in the Himalaya journal of tourism *H.N.B.G.U Garhwal university Srinagar.*
3. Government of india (1992), National action plan for tourism ministry of civil aviation and tourism.
4. Goonase kera.A (1992), India outbound,travel and tourism analyst. *No. 6 pp*
5. Kaur.J.(1985), Himalaya pilgrimage and the me tourism Himalayan books *new delhi.*
6. Jareat manoj (2004), tourism in himanchal Pradessah Indus. *Publishing company new delhi.*
7. Bist H.(1994),Tourism is Garhwal Himalaya *govt of india new Delhi*
8. Bhatia A.K. (1978), Tourism in india history and development sterling pub. PVT LTd. New Delhi
9. Bhatt T.C. (2004), Uttranchal ke Deya;aya (hindi) *Tayshila pavkashan new Delhi*
10. Negi J. (1990),Tourism Deueyopment and resource comserualion metropolitan *book CO new Delhi*
11. Negi J.(2004), International Tourism and Travel-concest & Princilpes. *C.Chand & Conpany new*
12. Singh S.C (1984), impact of Tourism on mountaim Enyironment Reseavch India *Pob. Meerut*

LBP PUBLICATION